International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-11-2019; Accepted: 19-12-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 77-79

जनजातिय विकास योजनाओं के प्रभावों का मूल्यांकन आदिवासी विकासखण्ड गोहपारू की बैगा जनजाति का प्रतीक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. कल्पना खरे
व्याख्याता, शा.उ.मा. विद्यालय छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मध्यप्रदेश के पूर्वी अँचल के शहडोल जिला के गोहपरू विकासखण्ड के वनाच्छादित क्षेत्र में बेगा जनजाति के 9560 व्यक्ति निवास कर रहे है; जिनमें 4485 पुरूष एवं 5075 महिलाएँ है। आर्थिक– सामाजिक दृष्टि से क्षेत्र में निवास कर रही अन्य जनजातियों की तुलना में यह बहुत पिछड़ी हुई जनजाति है। केन्द्र एवं राज्य शासन द्वारा इनके आर्थिक, सामाजिक उन्नयन हेतु विभिन्न योजनाओं का कृयान्वय किया जा रहा है। सात्क्षात्कार सूची आधारित किए गए शोधकार्य के आधार पर इस जनजाति में शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं के लाभ लेने की प्रवृत्ति तो दृष्टिगोचर होती है, किन्तु अन्य योजनाओं के लाभ प्राप्त करने के अवसरों की झुकाव की प्रवृत्ति कम मिलती है, जिसके संभावित कारणों में इन योजनाओं की जानकारी की कमी, योजना का लाभ प्रदाय के स्वरूप में त्रुटियाँ एवं इनका संकोची स्वभाव हो सकते है, जिनके निराकारण द्वारा ही समग्र योजनाओं के लाभ प्राप्ति की ओर ही ये लोग उन्मुख हो सकेगें।

मूल शब्द: बैगा, वनाच्छादित, अति पिछड़े, अर्थव्यवस्था, योजना, लाभ

प्रस्तावना
मध्यप्रदेश का पूर्वी अंचल जिसके अन्तर्गत सीधी, शहडोल, अनूपपुर एवं उमरिया जिले स्थित है, का समस्त भू–भाग ऐसा प्रदेश है जो अपनी धरातलीय विशेषताओं एवं घने वनों के कारण जनजातियों के संकेन्द्रण का प्रमुख क्षेत्र वन गया। इसी भूभाग में स्थित शहडोल जिला का गोहपारू विकासखण्ड सोन–वनास नदियों द्वारा विच्छेदित घने वनों से युक्त विषमधरातलीय क्षेत्र है, जहाँ 10 से अधिक जनजातीय समूह निवास करते हुए पाये जाते है, जिनमें से एक बैगा जनजाति है।

सभ्य दुनिया से दूर विपन्न हालात में निवास करने वाला यह मानव समूह सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार सामान्य जनसंख्या से जनजाति सम्वर्ग आर्थिक–सामाजिक दृष्टि से पिछड़े है, उसी प्रकार जनजातीय समूहों में से कुछ जनजातिय समूह आर्थिक–सामाजिक दृष्टि से अपने पड़ोसी जनजातियों की तुलना में बहुत पिछड़ी हुई है, जिनमें से एक बैगा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समस्त जनजातियों को संविधान में अधिसूचित करते हुये इनके सामाजिक–आर्थिक विकास के प्रयास प्रारंभ किये गये। केन्द्र एवं राज्य शासन द्वारा तैयार की गई नीतियों के तहत इनके विकास की योजनाएँ तैयार की गई। योजनाएँ किस प्रकार रूपांकित की गई तथा उन योजनाओं का कितना लाभ अध्ययन क्षेत्र की बैगा जनजाति को प्राप्त हुआ, प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य विषय वस्तु है।

बैगा जनजाति छोटा नागपुर पठार के मूल निवासी है, जो प्रवास कर छत्तीसगढ़ होते हुए मध्यप्रदेश के पूर्वी अंचल में स्थित शहडोल जिला के गोहपारू वकासखण्ड में पहुँचे। इनके प्रवास में हेहय वंशीय कल्चुरी शासकों द्वारा खदेड़ा जाना एवं घने वनों तथा अगम्य क्षेत्रों की उपस्थिति प्रभावी भूमिका में रही। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार गोहपारू विकासखण्ड में बैगा जनजाति की जनसंख्या 9560 व्यक्ति है, जो विकासखण्ड की कुल जनजातीय जनसंख्या का 14.20 प्रतिशत भाग है।[1] अध्ययन क्षेत्र में निवास करने वाली समग्र अनुसूचित जनजातीय समूहों में बैगा जनजाति देश, प्रदेश एवं विकासखण्ड की सबसे पिछड़ी हुई जनजातियों में से एक है।[2]

शोध विधि
भौगोलिक शोध कार्य में अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों एवं सूचनाओं को एकत्रित कर सांख्यिकीय विधियों से निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है। प्रस्तुत अध्ययन विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन से उपलब्ध सूचनाओं एवं विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से अनुभवात्मक विधि द्वारा पूर्ण किया गया है। अध्ययन की बोधगम्यता हेतु आवश्यकतानुसार आरेख एवं मानचित्रों की सहायता ली गई है।

शारीरिक संरचना
बैगा जनजाति सदियों से घने वनों के बीच गोड़ जनजाति के साथ–साथ निवास करती है, अतः कुछ लोगो को इन्हे गोड़ जनजाति का एक वर्ग होने की भ्रांति होती है, किन्तु इन दोनो जातियों के शारीरिक अभिलक्षणों के अध्ययन से पता चलता है कि वैगा जनजाति में मुण्डा (भूमिया) समुदाय के अभिलक्षण विद्यमान है[3], जबकि गोड़ जनजाति में द्राविण समुदाय के अभिलक्षण पाये जाते है। बैगा जनजाति के त्वचा का वर्ण हल्का गेहुँआ से गहरा काला, कपाल घातांक 70 से 75 तथा नाशा घातांक 78 होता है। वाल काले तथा सीधे होते है। इनका शारीरिक कद 135 से.मी. के मध्य पाया जाता है। होठ मोटे एवं नथुने चपटे पाये जाते है। इनके शरीर में वाल कम होते है।[4]

निवास क्षेत्र
मध्यप्रदेश में बैगा जनजाति के लोग मण्डला, डिण्डोरी, अनूपपुर, शहडोल एवं सीधी जिलों में मुख्य रूप से निवास कर रहे है। इनका निवास स्थल मुख्यतः नदी–नालों से घिरे हुये ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र एवं घने वनों के मध्य स्थित है। अध्ययन क्षेत्र में बैगा जनजाति के लोग मुख्यतः दियापीपर, धनगवाँ, असवारी, गुदहा, गोदरू, गुर्रा, करुआ, पतोरी, महवारा, लफड़ा, करीं आदि ग्राम पंचायतों में मिलता है।[5]

जनसंख्या
अन्य जनजाति समूहों की भांति अध्ययन क्षेत्र में निवास कर रही बैगा जनजाति की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, किन्तु विभिन्न आर्थिक–सामाजिक समस्याओं के कारण इनकी जनसंख्या में वृद्धि की दर कम पाई जाती है, जैसाकि निम्नांकित सारणी क्रमांक 5.2 से स्पष्ट होता है–

सारणी क्रमांक 1: बैगा जनजाति जनसंख्या का विकास, 1991–2011

क्र.	वर्ष	बैगा जनसंख्या	वृद्धि व्यक्तियों में	वृद्धि प्रतिशत
1.	1991	7211	.	.
2.	2001	8305	1094	15ण्17
3.	2011	9560	1255	15ण्11

स्त्रोत – जनपद कार्यालय गोहपारू से प्राप्त आंकड़ो पर आश्रृत

उपर्युक्त सारणी 1 से स्पष्ट होता है कि 1991 में इस विकासखण्ड में निवास करने वाली बैगा जनजाति की कुल जनसंख्या 7211 थी, जो 2001 में बढ़कर 8305 हो गई। इस प्रकार 1991 आधार वर्ष पर 2001 में 15.17 प्रतिशत की वृद्धि अंकित हुई मिलती है। 2001–2011 अवधि में 15.11 प्रतिशत की वृद्धि अंकित हुई मिलती है, 2001–11 अवधि में वृद्धि दर 1991–2001 की अवधि से अंशतः कम होने के मूल कारणों में इन में स्थायित्व की प्रवृत्ति का न होना है। आज भी ये लोग समीवर्ती विकासखण्डों – जयसिंहनगर, बुढ़ार, सोहागपुर के घने वनो की ओर पलायन करते रहते है।

जनसंख्या वितरण

बैगा जनसंख्या का वितरण अध्ययन क्षेत्र में एक समान नही पाया जाता। कुछ ग्राम पंचायतों में इनकी संख्या अधिक तथा कुछ ग्राम पंचायतों में निरंक है। सामान्यतः अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी घने वनों में स्थित ग्राम पंचायतें इनके प्रमुख निवास क्षेत्र है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति वर्ग कि.मी. क्षेत्र में बैगा जनसंख्या का घनत्व 10. 49 व्यक्ति है। लिंगानुपात की दृष्टि से इस विकासखण्ड में बैगा जनसंख्या का लिंगानुपात अन्य जनजातियों की तुलना सबसे उच्च है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 9560 व्यक्ति है, जिनमें 4485 पुरुष एवं 5075 महिला है। इस प्रकार प्रति 1000 पुरुषों पर बैगा महिला 1131.15 का अनुपात मिलता है, जो कुल जनसंख्या एवं कुल जनजातीय जनसंख्या के महिला अनुपात में अधिक है।[6]

बैगा जनजाति की आर्थिक जीवन

बैगा जीवन जंगल पर निर्भर है। बैगा परंपरागत खेती करने में आज भी विश्वास करते है। प्रारंभ में बैगा केवल डाहिया एवं बेवर खेती करते थे। ऐसा वे नागा बैगा के वरदान स्वरूप मानते हैं। आजकल बेवर खेती को अपराध घोषित किया गया है। बेवर खेती को बदलाव खेती भी कहते हैं। जंगलों को काटकर उसमें आग लगाकर जिस भूमि पर अनाज बोया जाता है, उसे बेवर खेती कहते हैं। इस समय बैगा स्थायी खेती करने लगे हैं। कोदों, कुटकी, मडिया, कंगनी, बाजरा, सामा, रतोनी, कुटकी, ज्वार, मक्का, कांगा, सिलार, दालें, राहर, उड़द, दिरा, झुंझरू, बरबटी, झुरगा आदि बैगाओं की फसल है। विभिन्न प्रकार की साग–सब्जियाँ उगाने का शौक इन में खूब प्रचलित है। वनोपज को इकट्ठा कर बेचना बैगाओं का प्रमुख काम है। महलोन और तेंदुपत्ता इकट्ठे करना भी बैगा स्त्रियों का काम है।

बैगा शिकार प्रिय जनजाति है। पशु–पक्षियों को शिकार के लिए विभिन्न प्रकार के फन्दों का उपयोग करते है। मछली पकड़ने के ही इनके पास कई फन्दे होते हैं। जंगल की यात्रा में बैगा धनुष–बाण अवश्य रखते हैं। बैगा मांसाहारी होते हैं। चूहे का शिकार करके खाने में बैगाओं को बहुत मजा आता है। इसके अतिरिक्त ये लोग जंगलों से नाना प्रकार के खाद्य–कुकुरमुत्तों का संचयन करके उसको बाजारों में बेचते है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत में यह पदार्थ सवर्ण हिन्दुओं या मुसलमानों द्वारा कुछ वर्षो पूर्व तक अखाद्य ही समझा जाता था किन्तु अब मटन, मशरूम तथा कुछ अन्य मशरूम भोजन की आधुनिकता की निशानी है। भारत में इसका प्रयोग आदिवासियों से ही प्रारंभ हुआ। मशरूम के बाद दूसरा खाद्य पदार्थ बैचांदी है, जो संपूर्ण पूर्वी मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्र में जनजातियों तथा गैर जनजातियों द्वारा सेवन किया जाता है। यह एक प्रकार के कंद से प्राप्त पदार्थ है। फिर इसे बहते पानी में या गड्ढे में तीन या चार दिन के लिए रख दिया जाता है। बाद में इसे घर लाकर उबाला जाता है, फिर इसका छिलका निकालक इसे साफ करते हैं, इसे फिर छोटे–छोटे गोल टुकड़ों में चिप्स की भांति काटा और सुखाया जाता है। इसी को बैचांदी कहते है। बैचांदी को लोग शक्कर में पकाकर खाते हैं या वैसे भी इसे खाया जा सकता है। बैचांदी के अतिरिक्त तोखुर भी ऐसा ही एक कंद से निकला हुआ पदार्थ है जिसके चूर्ण को खाया जाता है। गैर जनजातीय लोग इसे दूध में मिलाकर खाते हैं। इससे दूध गाढ़ा हो जाता है। उपर्युक्त कंदों के अतिरिक्त भी कुछ कंद पाये जाते हैं, जिन्हें भूंजकर या बिना भूने खाया जाता है। यहां की जनजातियां, बेर, चिरौंजी, इमली, इत्यादि अनेक फलों का भी संचयन करती हैं। जिनमें चिरौंजी तो अब जनसाधारण की क्रयशक्ति के बाहर हो गई है। वह अब एक मंहगा मेवा है।

उपर्युक्त परम्परागत आर्थिक कार्यो के अतिरिक्त केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा बैगा जनजाति के विकास हेतु चलायी जाने वाली योजनाओं के कारण इनके अर्थव्यवस्था की प्रवृत्ति में बदलाव आने लगा है। क्षेत्रीय सर्वेक्षण 50 बैगा व्यक्तियों से साक्षात्कार से प्राप्त परिणामों का विवरण निम्नानुसार (सारणी क्रमांक 2) है।

सारणी 2: बैगा जनजाति की अर्थव्यवस्था की प्रकृत्ति

क्र.	साक्षात्कार शामिल बैगा संख्या	उत्तरदाता संख्या	कुल से प्रतिशत	स्थायी कृषि	संख्या	प्रतिशत
1.	50	50	100	स्थायी कृषि	7	14
				पशुपालन	2	4
				स्थायी विधि श्रमिक	9	18
				स्थायी वनों में श्रमिक	11	22
				अन्य सेवाएँ एवं विविध उद्यम	21	42
योग	50	50	100		50	100

स्त्रोतः क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित 2014–15

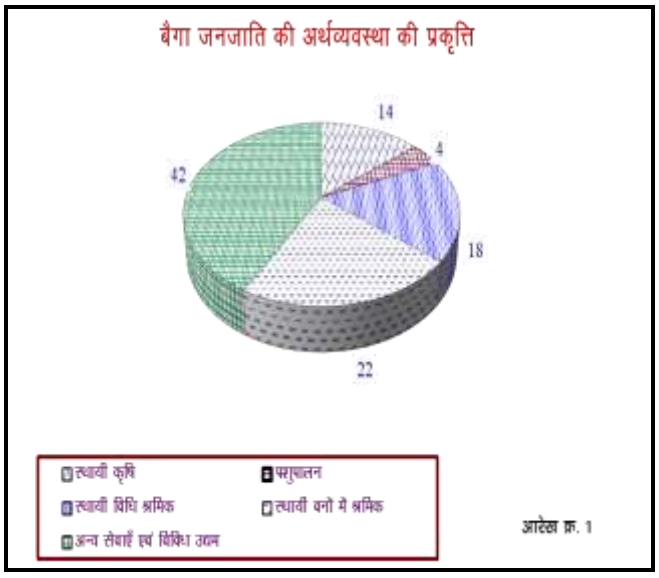

उपर्युक्त सारणी क्र. 2 के अनुसार प्रवृत्ति से घुमन्तू बैगा जनजाति के लोग स्थाई कृषि, पशुपालन, मजदूरी एवं अन्य विविध उद्यमों एवं सेवाओं की ओर अग्रसर हुये है। अब उनमें स्थाई निवास की इच्छा पनपी है तथा अन्य (सामान्य) लोगों की तरह अपना जीवनयापन करना चाहते है। उक्त परिवर्तन शासकीय सुविधाओं एवं शिक्षा विकास की योजनाओं के कारण होना मानते है।

बैगा जनजाति के आर्थिक–सामाजिक विकास की योजनाएँ :

अध्ययन क्षेत्र गोहपारू विकासखण्ड में निवास कर रही जनजातियों में जनसंख्या आकार की दृष्टि से बैगा जनजाति द्वितीय क्रम पर है। यद्यपि गोड़ एवं बैगा एक ग्राम में साथ–साथ निवास करते हुये पाये जाते है तथापि गोड़ जनजाति की तुलना में ये विषमधरातलीय क्षेत्र एवं वन्य युक्त स्थान का चयन अधिवास के रूप में करते है, जो गोड़ बस्ती से दूर होता है। म.प्र. के अन्य विकासखण्डो की भांति गोहपारू विकासखण्ड में सभी जनजातियों के विकास के लिये जितनी योजनाएँ संचालित है, वे सब बैगा जनजाति के लिये भी है। उन योजनाओं के अतिरिक्त चूंकि बैगा जनजाति भारत की 07 एवं म.प्र. की 03 अति पिछड़ी जनजातियों में समाहित है, अतः इसके विकास के लिए अलग से बैगा प्राधिकरण का गठन कर इनके सामाजिक–आर्थिक विकास की योजनाओं का रूपांकन किया गया है। इस प्राधिकरण का बजट आवंटन केन्द्र सरकार द्वारा किया जाता है। इस प्रकार गोहपारू विकासखण्ड में निवास करने वाली बैगा जनजाति के लिये जनजातीय विकास विभाग एवं बैगा प्राधिकरण दोनों की योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है।

बैगा जनजाति के विकास हेतु संचालित योजनाओं एवं हितग्राहियों की प्रवृति की जानकारी प्राप्त करने के लिये विभिन्न ग्रामों के 50 बैगा परिवारों का साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करते हुये योजनाओं के बारे में जानकारी एवं लाभ प्राप्त के स्वरूप की प्रवृत्ति निम्नानुसार पाई गई –

सारणी 3: बैगा जनजाति विकास योजनाओं का प्रारूप 2014–15 साक्षात्कार सूची में शामिल संख्या 50

क्र.	मद विवरण	आवेदक संख्या	साक्षात्कार संख्या से प्रतिशत	लाभार्थी संख्या	आवेदक संख्या से प्रतिशत
1.	शिक्षा विकास की योजनाएँ	50	100	100	100
2.	स्वास्थ्य सेवाएँ	50	100	100	100
3.	कृषि योजनाएँ	05	20	05	100
4.	ट्रैक्टर ट्राली	01	2	निरंक	निरंक
5.	बकरी पालन	06	12	5	10
6.	कृषि उत्पादक	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
7.	मुर्गीपालन	12	24	9	18
8.	सुअर पालन	09	18	5	10
9.	लघु वनोपज क्रय–विक्रय	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
10.	डेयरी फार्मिंग	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
11.	नरसरी एवं वर्मीकल्चर	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
12.	जीप–टैक्सी योजना	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
13.	आटो–रिक्शा योजना	1	2	निरंक	निरंक
14.	ट्रक–बस योजना	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
15.	बस योजना	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
16.	सायकल–रिक्शा	5	10	5	100
17.	ट्रेवल एजेंसी	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
18.	सेवा क्षेत्र से संबंधित	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
19.	फोटोकॉपियर	1	2	1	100
20.	जनरल स्टोर	2	4	2	100
21.	एस.टी.डी./ पी.सी.ओ.	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
22.	टेन्ट हाउस	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
23.	इन्टरनेट योजना	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
24.	मेडिकल स्टोर	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
25.	पान दुकान	1	2	1	100
26.	उद्योग संबंधी	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
27.	ईटा भट्टा	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
28.	झाड़ू निर्माण	3	6	2	66
29.	प्रिंटिंग प्रेस	निरंक	निरंक	निरंक	निरंक
30.	बांस टोकरी निर्माण	4	8	4	100
31.	सामाजिक योजनाएँ	6	12	6	100
32.	राहत–मद की योजनाएँ	2	4	2	100

उपर्युक्त सारणी क्र. 3 से स्पष्ट होता है कि बैगा जनजाति के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ है, किन्तु योजनाओं से लाभ प्राप्त करने के लिये आवेदन 2014–15 अवधि में जो किये गये है, उससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा विकास एवं स्वास्थ्य से सम्बन्धित योजनाओं के अतिरिक्त बैगा जनजाति के लोगों को या तो जानकारी नही है, अथवा योजनाओं को लाभ प्राप्त करने की उत्सुकता नहीं है। जिन प्रमुख योजनाओं का लाभ बैगा जनजाति के द्वारा प्राप्त किया गया है, उनमें शिक्षा विकास से जुड़ी हुई समग्र योजनाएँ, स्वास्थ्य से सम्बन्धित योजनाएँ कृषि से सम्बन्धित योजनाएँ, पशुपालन विशेषतः सुअर पालन, मुर्गीपालन, बकरी पालन की योजनाएँ प्रमुख है। संभवतः इन योजनाओं की ओर इनकी अधिक रुझान अभी भी इनकी उन्मुक्त वन्य संस्कृति का आकर्षण है। बाजार ग्राम केन्द्र गोहपारू, खन्नौधी, दियापीपर में निवास करने वाले बैगा जनजाति के लोग रिक्शा योजना, सायकल क्रय योजना, फोटोकॉपियर, जनरल स्टोर, पान की दुकान, झाड़ू निमार्ण, बांस टोकरी निर्माण जैसी आर्थिक योजनाओं का लाभ 2014–15 में प्राप्त किया। उक्त योजनाओं के अतिरिक्त सामाजिक योजनाओं, राहत एवं पुनर्वास की संचालति योजनाओं का लाभ भी बैगा जनजाति के लोग प्राप्त किये है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः बैगा जनजाति के लोग अभी भी शासकीय योजनाओं का पर्याप्त लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे है। यद्यपि शासकीय प्रयासों, समीपी गोड़ जनजाति की देखा–सिखी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिये प्रयासरत होने लगे है, किन्तु शिक्षा के अतिरिक्त पशुपालन एवं कृषि योजनाओं की ओर इनका झुकाव अधिक है। द्वितीयक एवं तृतीयक अर्थव्यवस्था आधारित योजनाओं के लाभ प्राप्त करने की ओर अभी तक उन्मुख नहीं हो सके है, जो संभावित इस जनजाति की स्वभावजन्य विशेषता, योजना की समुचित जानकारी न होना एवं त्रुटिपूर्ण व्यवस्था है। जिसका निदान आवश्यक है।

आभार

परमपूज्य डॉ. सी.पी. तिवारी, पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा का आभारी हूँ जिन्होंने शोध पत्र के लेखन हेतु प्रेरणा प्रदान करते रहे।

सन्दर्भ सूची

1. जनपद कार्यालय गोहपारू, जिला शहडोल वर्ष 2011.
2. शिव कुमार तिवारी, म.प्र. की जनजातियाँ, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, म.प्र. भोपाल 1987 पृ. 203.
3. सी.पी. तिवारी – जनजातीय पर्यावरण, आशा पब्लिशिंग, आगरा, 2003, पृ. 193
4. चतुर्भुज मानोरिया – मानव भूगोल – रस्तोगी प्रकाशन आगरा–1977, 68.
5. क्षेत्रीय सर्वेक्षण वर्ष 2014 पर आधारित
6. जनपद कार्यालय गोहपारू से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित.